clickastro

SERVED OVER 107 MILLION SMILES
SINCE 1984

WEALTH REPORT

PREMIUM REPORT

नाम	: Rahul Kumar
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 1 जानुवरी, 1989 रविवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 00:05:00 AM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: New Delhi
रेखांश & अक्षांश (Deg.Mins)	: 77.12 पूरब , 28.36 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष = 23 डिग्रि. 42 मिनिट. 19 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: **हस्त** - 4
जन्म राशी - राशी का देव	: **कन्या** - बुध
लग्न - लग्न का देव	: कन्या - बुध
तिथि	: नवमि, कृष्णपक्ष
सूर्योदय	: 07:14 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 05:35 PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 10.21
दिनामान (Nazhika.Vinazhika)	: 25.52
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 21 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: शनिवार
कलिदिना	: 1859061
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन
नक्षत्र का देव	: चन्द्र
गणम्, योनी, जानवर	: देव, स्त्री, भैंस
पक्षी, पेड	: कौआ, आंवडे का पेड़
चन्द्र अवस्था	: 12 / 12
चन्द्र वेला	: 35 / 36
चन्द्र क्रिया	: 58 / 60
ठगड़ा राशी	: सिंह,वृशचिक
करण	: ग्रघभ
नित्ययोग	: अतीगन्धा
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: धनु - पूर्वषाढा
अनगदित्य का स्था	: पैर
Zodiac sign (Western System)	: Capricorn

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष = 23डिग्रि.42 मिनिट.18 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	161:53:33	कन्या	11:53:33	हस्त	1
चन्द्र	172:47:8	कन्या	22:47:8	हस्त	4
रवि	256:36:51	धनु	16:36:51	पूर्वषाढा	1
बुध	273:18:42	मकर	3:18:42	उत्तरषाढा	2
शुक्र	233:48:24	वृशचिक	23:48:24	ज्येष्ठ	3
मंगल	356:22:59	मीन	26:22:59	रेवत्ति	3
गुरु	33:2:11	वृषभ	3:2:11रितु	कृत्तिका	2
शनि	251:51:40	धनु	11:51:40	मूल	4
राहु	314:5:41	कुंम्भ	14:5:41	शताभिषा	3
केतु	134:5:41	सिंह	14:5:41	पूर्व फालगुनी	1
गुलिक	160:10:54	कन्या	10:10:54	हस्त	1

राशी

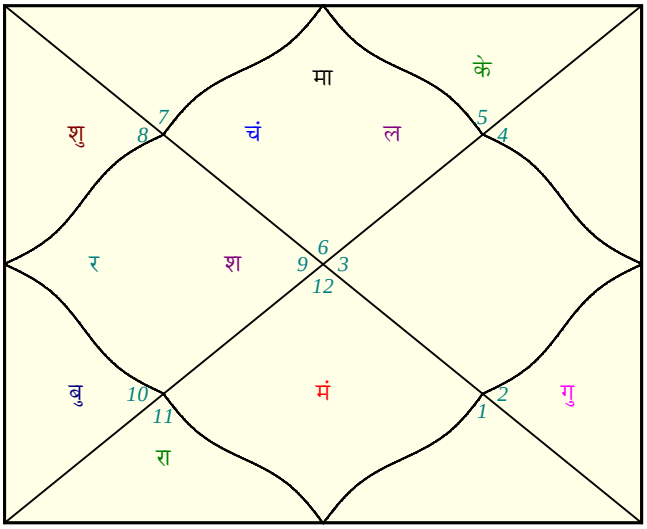

नवांश

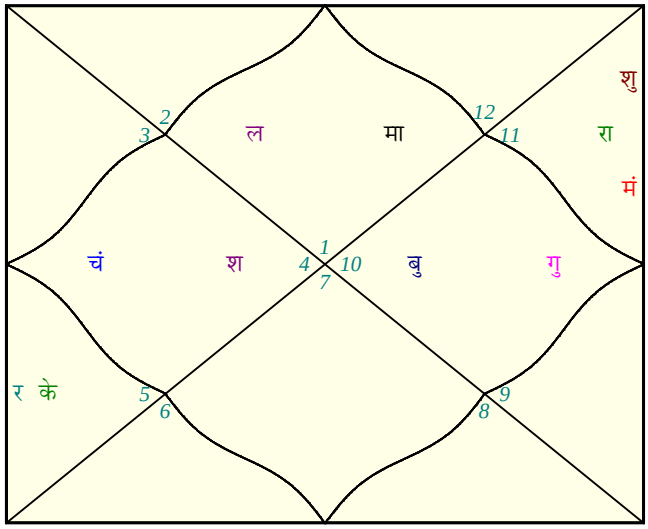

जन्म के समय दशा की समतुलना = चन्द्र 0 साल, 4 महीने, 28 दिन

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरे भाव का स्वामी तीसरे स्थान पर रहने से आप में धैर्य, बुद्धिचातुर्य और श्रेष्ठ स्वभाव का आविर्भाव होगा। स्त्री और पुरुष दोनों के साथ श्रेष्ठ संबन्ध स्थापित होंगे। समूह के बीच जिन कार्यों का निषेध किया जाता है, उन्हीं कार्यों से जुड़े रहने का योग दिखाई देता हैं। अन्यथा ऐसे कार्यों से धन संपन्नता हो सकती है। दानवी वृत्ति के लोगों से संबन्ध स्थापित होगा। आपको ठगपाना सरल न होगा। देवता में भी दानत्व ढूंड निकालेंगे।

ऐसा देखा जाता है कि गुरु दूसरे देव से संयोग में है । आप पुराने ऐतिहासिक पुस्तके पठना पसन्द करते है और अपने ज्ञान को दूसरों तक पहुँचाना चाहते है ।

क्योंकि दूसरा देव और चौथा भाव से प्रभावित है, आप मातृत्व सम्बंधो से धन और सम्पति पा सकते है ।

क्योंकि दूसरा देव सातवी भाव से प्रभावित है आप संन्तानो से धन और सम्पति पा सकते है ।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपके जन्म पत्रिका के चौथे भाव का स्वामी नौवे भाव में स्थित है। इसे भाग्य का जोड़ कह सकते हैं। आपके जीवन में पिताजी की बड़ी अहमियत होगा। आपको मिली हुई संपन्नता और प्रगति के कारण आपके पिता हैं। संपत्ति कमाने का भाग्य भी आप को प्राप्त है। जीवन में मिली हुई खुशी आप परिवार के बीच बाँटना पसंद करते हैं। शिक्षण कार्य में भी श्रेष्ठ प्रगति होगा।

चौथे भाव का स्वामी गुरु (बृहस्पति) है। श्रेष्ठ धार्मिक प्रचारक तुल्य लक्ष्यबोध आप में प्रकट हो उठेगा। धर्म गुरु सा सम्मान प्राप्त होगा। आपका व्यक्तित्व विद्यार्थी काल में और सभी कार्यक्षेत्र में सहयोगी बनेगा। आपकी आत्मीयता और स्वाभिमानी स्वभाव आपके मुख्य लक्षण है। एक न्याय मूर्ति के तुल्य समता और समभावपूर्ण व्यवहार आपकी शोभा में ओर भी बढ़ावा देगा। आपकी मानसिक परिपक्वता और निर्णयात्मक शक्ति उल्लेखनीय है।

सूर्य चौथे भाव में स्थित होने से आप को अकारण परेशान होकर अपने और दूसरों के सुख में बाधा ड़ालने के आदि हैं। व्यर्थ ही अस्वस्थ होने के भी आदि हैं। इन कारणों से व्यर्थ ही परिवार के लोग और मित्र परेशान होंगे। अकारण भटकने की संभावना है। पारिवारिक संपत्ति मिलने का योग है। दार्शनिक वाद-विवादों में विशेष रुचि रखनेवाले हैं। राजकारण की खटपटों से दूर रहना आपके लिए लाभदायी होगा। मातृ सुख के निमित्त प्रयत्नशील रहना होगा। छाती या पेट में विकार के लक्षण प्रकट होते ही वैद्यकीय परामर्श तत्काल लेना उचित होगा।

दर्शन, राष्ट्रमीमांसा, मनोविज्ञान, धातुविज्ञान और मानवजीवन के विकास कार्यों में नैसर्गिक अभिरुचि आप में बचपन से ही विकसित हुई है। लोक कल्याण के कार्यों में सदा मग्न रहने के कारण मानसिक शान्ति प्रदान होगी। मानव कल्याण के सर्व कार्य सुंदरता से कर पायेंगे।

शनि आपके चौथे भाव में स्थित है। आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। आप आलसी स्वभाव के हैं। मातृसुख इच्छानुसार न प्राप्त होने से अप्रसन्न रहेंगे। सामान्यतः एकान्त प्रिय हैं। कुछ संबन्धियों से आपका अप्रिय व्यवहार होगा। मकान, गाडी इत्यादि के सिलसिले में तैयार किए कागज़ात पर हस्ताक्षर करने से पहले ठीक पढाई कर लेना आवश्यक होगा। परिवार के सुख और समृद्धि के लिए कई स्थानों पर भाग-दौड़ करनी होगी। शनि का 'स्थान वृद्धि कर मंद' वचनानुसार अन्ततः चतुर्थ भाव संबन्धी सुख मिलकर ही रहेंगे।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति तीसरे स्थान पर है। साहित्य कार्य से या वृकतत्व कला के माध्यम से या अन्य किसी कलात्मक क्रिया से कोई संस्था से अर्थ संपन्न होने की संभावना है। आप उपरोक्त कला में सफलता प्राप्त करने वाले पुरुष हैं। भाई बहन से सहयोग सुलभता से प्राप्त होगा। 'सहजगते सकृतपतौ रूप स्त्रीबंधु वत्सलः पुरुषः'

आपके नौवे भाव में बृहस्पति रहने से आप नियम और दर्शन के अच्छे ज्ञाता होंगे। 'नरपतेः सचिवः सुकृतो कृती.....'

नवमा भावाधिपति गुरु (बृहस्पति) के सानिध्य में है। अतः अनेक प्रगति का कारण बन सकता है। भाग्येश आपको अनिष्ठों से बचा सकता है। परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होग ।

नवमें भाव पर स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति अनेक सुख संपत्ति की प्राप्ती दिलानेवाला है। अनेक अनिष्ठ कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गं को सूचित करता है ।

ग्यारहवाँ भावाधिपति लग्न स्थान पर रहने से आप स्वभाव से निश्छल और आत्मीयता रखने वाले व्यक्ति हैं। हर समस्या का तटस्थ भाव से अवलोकन करने में और निर्णय लेने में निपुण हैं। साहित्य के प्रति नैसर्गिक अभिरुचि रखने वाले व्यक्ति हैं। हर कार्य में सफलता आप का साथ देगी। आप विजयी बनेंगे। लाभदायी अनेक संजोग प्राप्त होंगे। विवाह के बाद ऐश्वर्य में अभिवृद्धि होगी। समदर्शी के रूप में ख्याति मिलना संभव है।

ग्यारहवी देव केन्द्र स्थान पर है । आप धन और संम्पति पा सकते है ।

रत्नधारण की सलाह।

प्रत्येक वस्तु चाहे निर्जीव हो अथवा सजीव, धातु हो, द्रव्य हो या गैस हो उसका मानव शरीर की रक्त संचार व्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है। शरीर की रक्त संचार प्रणाली ही मनुष्य के क्रिया कलाप, विचार शक्ति और उसकी उर्जा को प्रभावित करती है। शरीर का नियंत्रण और नियोजन करनेवाले इसी वैज्ञानिक सिद्धांत के कारण मनुष्य पर रत्नों का प्रभाव होता है। रत्न प्रकृति की अद्‌भुत रचना है। अनुसंधान द्वारा यह जाना गया है कि विशेष चयन विधी के द्वारा अगर रत्नों को धारण किया जाय तो जीवन में स्पष्ट और उल्लेखनीय परिवर्तन लाया जा सकता है।

रत्नों के विशेष गुण धर्म के अनुसार अपने साम्य ग्रहों की किरणों को अपने भीतर सोखते हैं और स्वाभाविक प्राकृतिक प्रक्रिया के कारण धारक के शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं।

रत्न क्रूर ग्रहों के कुप्रभाव को कम करते हैं और शुभ ग्रहों के शुभ प्रभाव के शुभत्व को बढ़ावा देते हैं।

षड्‌बल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्‌बल						
532.81	313.02	366.73	344.92	522.67	345.31	429.19
संपूर्ण शडबल (रूप)						
8.88	5.22	6.11	5.75	8.71	5.76	7.15
मौलीक ज़रूरतें						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.48	1.04	0.87	1.05	1.74	0.89	1.43
संबन्धी स्थानक						
2	5	7	4	1	6	3

विश्लेषण

आपकी कुंडली में ग्रहों की शक्ति या प्रभाव का निर्णय षड्‌बला से किया गया है।

ग्रह, आपकी कुंडली में षड्‌बला प्रमाण १ से बलहीन हैं।

आपकी कुंडली में सबसे बलहीन ग्रह है बुध

शुभ भाव:

लग्नाधिपति है बुध

लग्नाधिपति बलहीन है।
राशि का स्वामी है बुध
राशि का स्वामी बलहीन है।
पाँचवें भाव का स्वामी है शनि
नवमे भाव का स्वामी है शुक्र

अशुभ भाव:

छठा अधिपति शनि है ।
आठवी अधिपति मंगल है ।

विभिन्न भावों के अधिपति और शक्त गृहों के सूक्ष्म विश्लेषण के बाद ही रत्नों को चूना जाता है । एक जन्मकुण्डली के लिए लाभदायक रत्न को 'अनुकूल - गृह' सिस्टेम के आधार पर चुन लिया जाता है ।

रत्न धारण की सलाह
१.गृह : बुध
रत्न : पन्ना (Emerald)
केरेट में वज़न : ३

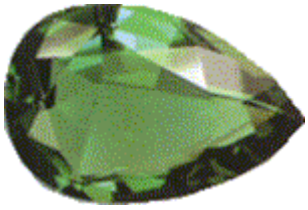

रत्न को सोने की अंगूठी में जड़ें।
रत्न को दायाँ हाथ (Right Hand) पर कनिष्ठा (Small Finger) में पहनिए।
वुधवार के दिन सूर्योदय के १५ मिनट पश्चात पहनिए।

पन्ना हरे रंग का होता है और यह बुध ग्रह को अपने पक्ष में करता है। यह ठंडा रत्न है। इसका उपरत्न 'जाडे' है और पेरीडाट भी इसका उपरत्न है।

रत्न धारण करने के पूर्व सावधानी / मौलिक तैयारियाँ

आज पहली बार जब आप रत्नों को धारण करनेवाले हैं तो यह अवसर खास प्रकार से महत्वपूर्ण माना जाता है। इस संदर्भ में मानसिक तैयारी और शुद्धता यानी स्वच्छता को महत्व देना अनिवार्य बन जाता है। इसलिए अपनी-अपनी धार्मिक मान्यता के अनुसार देव-दर्शन, पाठ पूजा, मंत्रजप इत्यादी करना उचित होगा। अपने माता-पिता, गुरु, देव-देवी इत्यादी के आशीर्वाद अत्यधिक लाभदायी रहेगा।

उपरोक्त प्रक्रियता के लिए उपयुक्त दिन चुना जाये। हर रत्नों के लिए एक निश्चित दिन श्रेष्ठ माना जाता है। उसके अनुसार ही दिनको चुनना उचित होगा। आवास स्थान के सूर्योदय समय को ध्यान में रखा जाये। यह केलेन्डर से प्राप्त होता है। सूर्योदय की जानकारी हिन्दुओं के 'पंचांग' से भी प्राप्त हो सकता है। तथां मन्दिरों से भी यह जाना जा सकता है। प्रभात के ब्रह्म मुहूर्त के समय उठ जाना उचित होगा। यह समय प्रभात के चार बजे से प्रारंभ होता है। सुबह के नित्य और नैसर्गिक कर्मों के बाद (स्नानादी कार्यों के पश्चात) साफ़-सुथरे कपड़े धारण करें। प्रार्थना या ईश्वर चिंतन के बाद मन को शाँत करें। ध्यान की प्रक्रिया इसके लिए युक्त मानी जाती है। अपने कार्यों को निश्चित रूप से किया जाये ताकि निर्धारित समय पर आप अमूल्य रत्न को धारण कर सकें। (जब भी हम पहली बार

अमूल्य रत्न को धारण करते हैं तो यह उचित होगा कि यह कार्य अपने माँ-बाप, गुरु अथवा बुज़ुर्गों के सानिध्य में हो। उनका आशीर्वाद हमें सफलता प्रदान करता है।)

रत्न की गुणवता

रत्न किसी विश्वास योग्य स्थान से परख कर लें। रत्न को जिस धातु में धारण करने के लिए कहा गया है उसमें ही धारण करना उचित होगा। रत्न जड़ित अंगूठी अनुभवि सुनार से ही बनवायें। रत्न धारण करने का दिन और समय भी महत्वपूर्ण है। रत्न में 'प्राण-प्रतिष्ठा' करना अति आवशयक है। आप स्वयं साफ-सफाई और स्नान करके पूजा पाठ करके प्राण-प्रतिष्ठा कर सकते हैं। रत्न मे प्राण-प्रतिष्ठा करनी ही चाहिए। रत्न दर्शायी गयी तिथि तक ही धारण किया जाय।

चेतावनी / सावधानी

जिन रत्नों को धारण करने की सलाह प्राप्त होती है वह निश्चित काल के लिए होती है। आपकी जन्म पत्रिका में बताई गई दशा के बदलने से रत्न धारण की प्रक्रिया में परिवर्तन अनिवार्य बन जाता है। साथ-साथ जीवनकाल में आपकी समस्याओं में भी परिवर्तन होता रहता है। इस कारण निश्चित काल परिधी के बाद रत्न धारण की जानकारी करना अनिवार्य है।

ऐसा विश्वास किया जाता है कि अगर एक व्यक्ति रत्नो को अधिक समय तक पहने, तो उसका ज्योतिष युक्त परिहार शक्ति नष्ट हो जाता है । विविध रत्नों का समुचित कालावधि इस प्रकार है । मोती - २ वर्ष, माणिक - ४ वर्ष, मरकत मणि - ३ वर्ष, हीरा - ७ वर्ष, लाल मूँगा - ३ वर्ष, पीला मणि -४ वर्ष, नीलमणि - ५ वर्ष, गोमेदक - ३ वर्ष, लहसुनिया - ५ वर्ष । प्रस्तुत कालावधि के बाद नए रत्न से बना नया अँगूठी निर्देश किया गया है ।

कृपया ध्यान रहे आपकी अगली दशा 31-05-2030पर परिवर्तित होगी।

With best wishes : Astro-Vision Futuretech Pvt.Ltd.
First Floor, White Tower, Kuthappadi Road, Thammanam P.O - 682032

[LS-AT 1.0.0.4]

Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.